Gyanvividha, Vol.-2; Issue-2 (Apr.-June) 2025 : PP-107-110

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-2 (Apr.-June) 2025
Page No.- 107-110
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

1. डॉ. सुबोध झा
सहायक प्राध्यापक (अतिथि संकाय)
राजनीति विज्ञान, श्री राधा कृष्ण गोयनका कॉलेज सीतामढ़ी.

2. डॉ. इष्टदेव ओझा
217 डी0, अशोक नगर,
बशारतपुर, गोरखपुर.

Corresponding Author :

डॉ. सुबोध झा
सहायक प्राध्यापक (अतिथि संकाय)
राजनीति विज्ञान, श्री राधा कृष्ण गोयनका कॉलेज सीतामढ़ी.

अतीत का गौरव : नालन्दा विश्वविद्यालय

प्राचीन भारत के शिक्षा केन्द्रों में नालन्दा विश्वविद्यालय का नाम सर्वाधिक उल्लेखनीय है। नालन्दा विश्वविद्यालय बिहार प्रान्त की राजधानी पटना के दक्षिण में लगभग 40 मील की दूरी पर आधुनिक बड़ागाँव नामक ग्राम के समीप स्थित था। नालन्दा से राजगृह की दूरी लगभग 8 मील है। गुप्तकाल में कुमार गुप्त प्रथम (415 - 455 ई0) ने सर्वप्रथम यहां एक बौद्ध बिहार की स्थापना करवायी थी। ऐसा विदित होता है कि इसकी स्थापना कुमार गुप्त ने बौद्ध धर्म के त्रिरत्नों के प्रति महती श्रद्धा के कारण करवायी थी। चीनी यात्री के विवरण से ज्ञात होता है कि गुप्त राजवंश के लगभग पांच शासको ने इस विहार के विकास में योगदान दिया था।[1] यद्यपि इन शासको का कालक्रम सुनिश्चित नही है। हर्षवर्धन के शासन काल में इसका समुचित विकास हुआ।[2] उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि नालन्दा विश्वविद्यालय, जो पहले विश्वविख्यात शिक्षण-संस्था के रूप में प्रसिद्ध हुआ था।[3] नवी सदी में इसका प्रधानाचार्य एक भिक्षु को ही चुना गया था।[4] प्रधानाचार्य की सहायता प्रदान करने के लिये कई समितियों का गठन किया गया था, जिसमें दो समितियां प्रमुख थी-

1. शिक्षा समिति
2. प्रबन्ध समिति

शिक्षा समिति का प्रमुख कार्य विभिन्न पाठ्यक्रमों का निर्धारण और व्यवस्था का नियोजन होता था तथा प्रबन्ध समिति का प्रधान कार्य शिक्षा संस्थाओं की प्रशासनिक व्यवस्था कायकर्ताओं की नियुक्ति तथा भवनों का निर्माण आदि होते थे।[5]

श्वानच्वांग के विवरण से ज्ञात होता है कि अनेकानेक बौद्ध विहारों का निर्माण नालन्दा में किया गया था।[6] विहारों में कुछ तो

काफी बड़े और भव्य थे जिनके गगनचुम्बी, शिखर अत्यन्त आकर्षक थे। यहां का सबसे बड़ा विहार 203 फीट लम्बा और 114 फीट चौड़ा था। इसके कक्ष 9 फीट से 12 फीट तक लम्बें थे। उपर्युक्त विवरण की पुष्टि आठवीं शती के कन्नौज नरेश यशोवर्मन के नालन्दा से प्राप्त मन्दसोर प्रस्तर अभिलेख से भी होती है "जिसके अनुसार नालन्दा के गगनचुम्बी पर्वत शिखर के समान विहारावलियाँ पृथ्वी के ऊपर ब्रह्मा द्वारा विरचित सुन्दरमाला के समान शोभायमान हो रही थी।"[9] इनमें अनेक जलाशय थे जिनमें कमल तैरते रहते थे। यहां कई विशालकाय भवन थे जिनमें छोटे-बड़े अनेक कक्ष थे। उत्खनन से मिले अवशेष यहां की भव्यता को प्रमाणित करते है। विश्वविद्यालय भवन में व्याख्यान के निमित्त सात विशालकाय कक्ष और 300 छोटे-बड़े कक्ष थे। विद्यार्थी छात्रावासों में रहते थे तथा प्रत्येक कोने में कूपो का निर्माण किया गया था।[10] इसकी पुष्टि उत्खनन से मिले साक्ष्यों से भी सिद्ध होती है।

नालन्दा विश्वविद्यालय के खर्चे के लिये 200 गाँव दान में प्राप्त थे जिनकी आय से यहां के भिक्षु कार्यकताओं और भिक्षु अध्येताओं का पोषण होता था। यही नही इन गाँवों के निवासी प्रतिदिन कई मन चावल और दूध यहाँ भेजा करते थे। विद्यार्थियों से किसी प्रकार का शुल्क नही लिया जाता था। उनके आवास और भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की गयी थी।[11]

इस शिक्षा संस्था में प्रवेश पाने के इच्छुक विद्यार्थियों के लिये कड़े नियम थे। ऐसे प्रवेशेच्छुक विद्यार्थी को सबसे पहले द्वारपाल से वाद विवाद करना पड़ता था तथा उसकी शंकाओं का समाधान करना आवश्यक था। ऐसा ज्ञात होता है कि द्वारपाल की शंका का समाधान में एक दो विद्यार्थी ही सफल होते थे जबकि असफल होने की संख्या 8-10 विद्यार्थी की होती थी [12] अपने-अपने विषय के यहां अनेक विद्वान थे जो विद्यार्थियों को शिक्षित करते थे।

नालन्दा में युआनच्वांग ने, उस संस्था के प्रमुख आचार्य शीलभद्र से पाँच वर्ष तक योगदर्शन का अध्ययन किया था। यहां अध्ययन की कई शालायें थी, व्याख्यानों के लिये प्रवेश और उपस्थिति के नियम थे अनुशासन के और विद्यार्थियों के व्यवहार के नियम थे, शिक्षण व्यवस्था के विधि-निषेधात्मक नियम थे, नियमों की अवहेलना का पूरा दण्ड विधान था। यह संस्था इतनी बड़ी थी इस बात का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि युवांनच्वांग के अनुसार यहां डेढ़ हजार अध्यापक तथा दस हजार विद्यार्थी थे। इन अध्यापकों में लगभग 1000 सूत्र निकायों में दक्ष थे तथा शेष 500 अन्य विषयों में दक्ष थे। ईत्सिंग के समय से यहाँ विद्यार्थियों की संख्या घटकर 3000 हो गयी थी।[13]

यह विश्वविद्यालय मूल रुप से महायान सम्प्रदाय की शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। इसके अतिरिक्त इस संस्था में वेद, तर्कशास्त्र, आयुर्वेद, अथर्वविद्या और सांख्यदर्शन की शिक्षा का भी उचित प्रबन्ध था।[14] इत्सिंग के "बौद्ध धर्म के वृत्तान्त से ज्ञात होता है कि विद्यार्थी के अध्ययन का एक मुख्य अनिवार्य विषय संस्कृत-व्याकरण था। इत्सिंग लिखते है - "पुराने अनुवादक (संस्कृत से चीनी में) संस्कृत भाषा के नियम हमें नही बताते..... अब मुझे पूरा विश्वास है कि संस्कृत व्याकरण के सम्पूर्ण अध्ययन से अब इस अनुवाद में जो भी कठिनाईयां आयेगी, दूर हो जायेगी" बाद में वह संस्कृत व्याकरण का व्यवस्थित रूप से कैसे अध्ययन होता था, उसका वर्णन देता है।[15]

यशोमित्र की टीका से स्पष्ट है कि व्याकरण ग्रन्थ पढ़े जाते थे, उनमें मुख्य निम्न थे :- पाणिनी सूत्र,

धातुपाठ, अष्टधातु, उणादिसूत्र, काशिकावृत्ति, चूर्णि, भतृहरि का शास्त्र वाक्यपदीय, और पेईन अथवा वेड़ावृत्ति। वे आगे लिखते है कि तरुण विद्यार्थी हेतु विद्या और अभिधर्मकोश सीखते है। न्याय द्वारा तर्क शास्त्र सीखने से उनकी अनुमान शक्ति विकसित होती है, और जातक माला पढ़ने से उनकी कल्पना और विचार शक्ति बढ़ती है। भिक्षु न केवल सब विनय सीखते है अपितु समस्त सूत्रों एवं शास्त्रों का भी अनुसंधान करते है।[16]

विद्यार्थी के अध्ययन के लिये यहाँ धर्मयज्ञ नामक विशालकाय पुस्तकालय था। जिसमें 3 लाख से अधिक किताबे थी। ईत्सिंग ने स्वयं 400 संस्कृत पुस्तकों की प्रतिलिपियाँ तैयार की थी जिसमें लगभग पांच लाख श्लोक थे। रत्नसागर, रत्नोदिध और रत्नरंजक नामक तीन भवनों से मिलकर भव्य पुस्तकालय का निर्माण हुआ था, जिनमें जिज्ञासु और अध्ययनशील विद्यार्थियों की प्रायः भीड़ रहा करती थी।[17]

यहां का एक अध्यापक 9 या 10 विद्यार्थियों को पढ़ाता था। इस विश्वविद्यालय के अध्ययन कक्ष बहुधा बड़े-बड़े थे। सभी विषयों को मिलाकर यहाँ नित्य लगभग 100 व्याख्यानों का आयोजन किया जाता था।

पाठ्यक्रम की समाप्ति पर दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया जाता था। उसमें विद्यार्थी की सामाजिक स्थिति और गुणों को देखते हुये उपाधियां दी जाती थी। नित्य का कार्यक्रम घटिकायंत्र के सहारे नियमित किया जाता था। एक बड़े से पानी के कटोरे में एक छोटी छेद वाली कटोरी रखी जाती थी। वह एक पहर के चौथे हिस्से में पूरी भर जाती थी। फिर एक नगाड़े से एक प्रहर की सूचना दी जाती थी। विद्यार्थी और शिक्षक का एक काम का दिन आठ घंटे का होता था।[18]

नालन्दा में पालि भाषा की शिक्षा अनिवार्य रुप से प्रदान की जाती थी। नागार्जुन, वसुबंधु, असंग, धर्मकीर्ति आदि ऐसे ही महायानी विचारक जिन्होंने इसी शिक्षा केन्द्र से अपने को उन्नत किया था। श्वानच्वांग ने अनेक ऐसे विद्वान आचार्यो का उल्लेख किया है जो अपने अपने विषय के प्रकांड पण्डित थे तथा भारत के विभिन्न प्रदेशों से आकर यहां अध्ययन-अध्यापन का कार्य करते थे। उल्लेखनीय है कि आर्यदेव और दिड्नाग दक्षिण भारत के निवासी थे। धर्मपाल, कांची का निवासी था। शीलभद्र समतट (बंगाल) का निवासी था। गुणमति और स्थिरमति वल्लभी के निवासी थे।

नालंदा विश्वविद्यालय में न केवल भारत के कोने-कोने से अपितु चीन, मंगोलिया, तिब्बत, कोरिया, मध्यएशिया, जापान, ईरान, ग्रीस, मंगोलिया आदि देशों से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। यहां के विद्वानों के सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उन्होंने तिब्बत में बौद्ध धर्म एवं भारतीय संस्कृति का प्रचार किया। तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रचारकों में चन्द्रगोमिन तथा आठवी सदी के विद्वान शान्तरक्षित का नाम उल्लेखनीय है। जिन्होंने तिब्बत में बौद्ध धर्म का उपदेश दिया था। शान्तरक्षित के निर्देशन में ही तिब्बत में प्रथम बौद्ध मठ का निर्माण किया गया था।[19]

अमर्त्यसेन ने नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अमर्त्य सेन 2012 में नालंदा विश्वविद्यालय के प्रथम कुलाधिपति बने और 2006 में नालंदा प्रस्ताव पेश करने वाले पहले व्यक्ति थे। उनके प्रयासों के परिणाम स्वरुप नालंदा विश्वविद्यालय के पुनर्जीवित करने का प्रयास सफल रहा। जिससे भारत शिक्षा में क्रांतिकारी सुधार कर पुनः विश्वगुरु बन सके।

भारत के प्राचीन गौरव को पुनर्जीवित करने के लिए 11वें राष्ट्रपति डॉ ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम ने 28 मार्च 2006 को बिहार विधान मंडल में अपना विचार रखा। 2007 में बिहार विधानसभा में नालंदा विश्वविद्यालय के निर्माण के लिए एक विधेयक पारित किया जो नालंदा विश्वविद्यालय विधेयक 2010, 21 अगस्त 2010 को राज्यसभा में और 26 अगस्त 2010 को लोकसभा में पारित किया गया था। इस बिल को 21सितंबर 2010 में माननीय राष्ट्रपति की सहमति से एक अधिनियम बना। जो विश्वविद्यालय के रूप में 25 नवंबर 2010 को अस्तित्व में आया। विश्वविद्यालय के आगंतुक भारत के राष्ट्रपति हैं। यह एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है। जिसके कुलाधिपति प्रोफेसर अरविंद पनगड़िया एवं वर्तमान में कुलपति प्रोफेसर सिद्धार्थ सिंह हैं।

नालंदा विश्वविद्यालय में बौद्ध अध्ययन, दर्शनशास्त्र, तुलनात्मक धर्म की शिक्षा, इतिहास परिस्थिति की और पर्यावरण शिक्षा और मैनेजमेंट की शिक्षा प्रदान की जाती है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि नालन्दा विश्वविद्यालय प्राचीन भारत का गौरव था। यह प्राचीन शिक्षा का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण केन्द्र था जिसकी ख्याति न केवल भारत में अपितु विदेशो में भी फैली हुयी थी। वस्तुतः यह एक विश्वभारती था, जहां से सम्पूर्ण देश में संस्कृति का प्रसार होता था। वर्तमान सरकार के प्रयासो से इसे पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जा रहा है। जिससे भारत शिक्षा में क्रांतिकारी सुधार कर विश्वगुरु बन सके।

संदर्भ स्त्रोत :

1. द्र. के. सी. श्रीवास्तव: प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति 1996, युनाईटेड बुक डिपो, इलाहाबाद पृ.-756 जयशंकर मिश्र: प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, 1986 पटना पृ.-555,556.
2. वही,पृ.- 756.
3. टी0 वाटर्स: आन यान चांगस ट्रेवल इन इण्डिया, 1908 वॉल 2 लन्दन, पृ.-180.
4. द्र0 जयशंकर मिश्र : पूर्वोक्त पृ.-555.
5. टी0वाटर्स : पूर्वोक्त पृ.-165.
6. वही पृ.-164.
7. द्र0 एपिग्राफी इण्डिका, 20, 43.
8. जयशंकर मिश्र : पूर्वोक्त, पृ.-556.
9. यस्याम्बुधरावलेहि शिखरश्रेणी विहारावली। मालेवोर्ध्वविराजिनी विरचिता धात्रा मनोज्ञा भुवः।।
10. वाटर्स : पूर्वोक्त पृ.-180.
11. द्र0 जयशंकर मिश्रः पूर्वोक्त पृ.-556.
12. वाटर्स : पूर्वोक्त पृ.-165.
13. द्र0 बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष : आजकल, दिसम्बर 1956 दिल्ली पृ.-135, वाटर्स पूर्वोक्त
14. एस0 वील : लाइफ आफ ह्वेनसांग वाइ हुई.ली लन्दन 1911, पृ.-112.
15. बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष : पूर्वोक्त पृ.-136.
16. वही. पृ.-136.
17. वाटर्स, वॉल 1, पूर्वोक्त, पृ.-160.
18. बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष : पूर्वोक्त, पृ.-136.
19. के0सी श्रीवास्तव : पूर्वोक्त, पृ.-758, 759.
20. नालन्दा विश्वविद्यालय एक्ट, 2010.11. अक्टूबर 2011 पुरालेखित.

•